प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

एक राष्ट्र की संस्कृति वहां के लोगों के दिलों और आत्मा में बसती है...
-महात्मा गांधी

लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस ने अंततः 'तुरुप' का पत्ता चल दिया है। पिछले लोकसभा चुनाव में दो अंकों में सिमट गई कांग्रेस के लिए यह आम चुनाव बेहद अहम है, खासकर इसलिए, क्योंकि सपा-बसपा गठबंधन ने उसे कोई तवज्जो नहीं दी है।

प्रियंका की सियासी पारी

कांग्रेस

अध्यक्ष राहुल गांधी ने लोकसभा चुनाव से ऐन पहले अपनी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा को पार्टी का महासचिव बनाकर लंबे समय से जारी अटकलों को विराम दे दिया है। वस्तुतः प्रियंका ने भले ही अब तक औपचारिक रूप से कांग्रेस का कोई पद नहीं लिया था, लेकिन वह 1999 में अपनी मां सोनिया के पहले लोकसभा चुनाव के समय से सक्रिय रही हैं। सोनिया और राहुल के लोकसभा क्षेत्रों रायबरेली और अमेठी में उनका लगातार आना-जाना लगा रहा है। राहुल से पहले प्रियंका के राजनीति में आने की चर्चा रही है और विगत दो दशक से कांग्रेस के भीतर से उनके पक्ष में मांग उठती रही हैं। जाहिर है, न तो राजनीति में और न ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए प्रियंका नई हैं। इसके बावजूद उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश और उनके साथ ही ज्योतिरादित्य सिंधिया को पश्चिमी उत्तर प्रदेश का प्रभारी महासचिव बनाए जाने के खास मायने हैं। वास्तव में लोकसभा चुनाव से ऐन पहले कांग्रेस ने प्रियंका के रूप में अंततः अपना 'तुरुप' का पत्ता चल दिया है। पिछले लोकसभा चुनाव में दो अंकों में सिमट गई कांग्रेस के लिए यह आम चुनाव बेहद अहम है। 80 लोकसभा सीटों वाले उत्तर प्रदेश में वह पिछले लोकसभा चुनाव में रायबरेली और अमेठी की सीट ही बचा सकी थी और पिछले विधानसभा चुनाव में महज सात सीटें ही हासिल कर सकी। बची-खुची कसर मायावती और अखिलेश के गठबंधन ने कर दी, जिसने कांग्रेस को सिर्फ इन दो सीटों के लायक माना। जाहिर है, प्रियंका को दोहरी चुनौती का सामना करना होगा, जिसमें दूसरी ओर मोदी-शाह-योगी की मजबूत तिकड़ी है। इसके बावजूद यह भी हकीकत है कि राहुल की तुलना में प्रियंका का राजनीतिक आकर्षण कम नहीं है, लिहाजा उनके आने से कांग्रेस के आम कार्यकर्ताओं में स्फूर्ति दिखाई दे सकती है। यह भी साफ है कि वह सिर्फ पूर्वी उत्तर प्रदेश तक सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि पार्टी की स्टार प्रचारक भी होंगी। हालांकि उनके पति राबर्ट वाड्रा के मामलों ने उनकी छवि पर असर डाला है और इस फैसले का यह भी मतलब है कि गांधी-नेहरू परिवार उनसे जुड़े विवादों का राजनीतिक रूप से जवाब देने को तैयार है। क्या वह कांग्रेस को उसके पुराने दिनों की ओर ले जाने में सफल होंगी? इसका जवाब वक्त देगा, लेकिन प्रियंका की इस नई भूमिका ने लोकसभा चुनाव को दिलचस्प बना दिया है।

पश्चिम एशिया : टैंक नहीं, स्कूलों की जरूरत

9/11 के बाद से अमेरिका पूरी तरह हार्ड पावर पर निर्भर हो गया है। लेकिन अब यह सॉफ्ट पावर को आजमाने का समय है। इसमें लंबा समय लगेगा, लेकिन इसका कोई शॉर्टकट नहीं है।

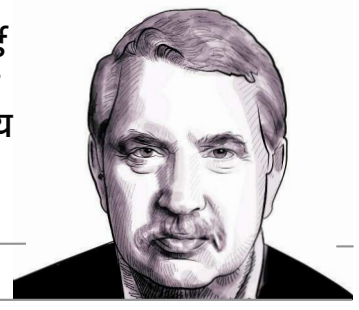

थॉमस एल फ्रीडमैन

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सीरिया से अमेरिकी सैनिकों को बाहर निकालने और अफगानिस्तान में उनकी संख्या कम करने की अचानक घोषणा ने पश्चिम एशिया में अमेरिकी थल सेना के बारे में एक नई बहस छेड़ दी है कि उन्हें वहां रखना महत्वपूर्ण है या नहीं। मैं खुद से भी वही सवाल पूछ रहा हूं। हालांकि उस सवाल का जवाब देने के लिए मुझे एक और सवाल से शुरुआत करनी होगी- ऐसा क्यों है कि एक अरब क्रांति वाला देश, जो तानाशाही से एक सांविधानिक लोकतंत्र में अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण बदलाव लाने में कामयाब रहा और वह भी अपनी महिलाओं के पूर्ण सशक्तीकरण के साथ, जिसके साथ हमने कम से कम संपर्क रखा है और जहां हमने अपने सैनिकों को लड़ने और मरने के लिए कभी नहीं भेजा? वह देश है, ट्यूनीशिया।

ट्यूनीशिया पश्चिम एशिया का एकमात्र ऐसा देश है, जिसने वह लक्ष्य हासिल किया है, जो हम इराक, सीरिया, मिस्र, लीबिया, यमन और अफगानिस्तान में बेहद शिद्दत से चाहते हैं। उसने अमेरिकी सैन्य सलाहकारों की तुलना में पिछले 50 वर्षों में अमेरिकी शांति वाहिनी के कहीं अधिक कार्यकर्ताओं की मेजबानी के बाद ऐसा किया है और 2010-11 की लोकतंत्र की बहाली से संबंधित अपनी क्रांति के बाद उसने मात्र एक अरब डॉलर की सहायता (और तीन ऋण गारंटी) प्राप्त की है। तुलनात्मक रूप से अमेरिका अफगानिस्तान को एक बहुलतावादी लोकतंत्र में बदलने की कोशिश के 17 वर्ष बाद अब वहां एक वर्ष में 45 अरब डॉलर खर्च कर रहा है। यह एक उन्मादी विरोधाभास है, खासकर तब जब आप समझते हैं कि ट्यूनीशिया का स्व-संचालित लोकतंत्र उस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण मॉडल है, लेकिन तेजी से आर्थिक रूप से कमजोर होता जा रहा है।

ट्यूनीशिया खुद को लोकतंत्र में क्यों बदल सका, जबकि अन्य देश ऐसा नहीं कर सके? इसकी शुरुआत 1956 में ट्यूनीशिया को स्वतंत्रता मिलने के बाद से 1987 तक उसके नेता और संस्थापक रहे हबीब बोरगुइबा से होती है। हालांकि वह भी अन्य अरब तानाशाहों की तरह जीवन भर के लिए राष्ट्रपति थे, लेकिन वह कुछ मामलों में अनूठे थे। उन्होंने अपनी सेना का आकार छोटा रखा और इस्राइल को खत्म करने की कोशिश में चार दशक खत्म नहीं किए। वह सहअस्तित्व की बात करने वाले अकेली आवाज थे।

उन्होंने ट्यूनीशियाई महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाया और अपेक्षाकृत मजबूत नागरिक समाज समूहों को उभरने दिया-ट्रेड यूनियन, वकीलों का सिंडिकेट, महिला समूह, जो बोरगुइबा के अत्याचारी उत्तराधिकारी को परास्त करने और ट्यूनीशिया के इस्लामी आंदोलन के साथ एक नया संविधान बनाने के लिए महत्वपूर्ण थे। ट्यूनीशिया के पास भी थोड़ा तेल था, जिसकी कमाई को उसने अपने नागरिकों को शिक्षित करने में निवेश किया।

संक्षेप में, ट्यूनीशिया के पास लोकतांत्रिक क्रांति को बनाए रखने के लिए सांस्कृतिक आधार था। लेकिन राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलाव विभिन्न गतियों से होते हैं। अमेरिका (जिसमें मैं भी शामिल हूं) अफगानिस्तान और इराक में तेजी से आवश्यक सांस्कृतिक बदलाव चाहता है, लेकिन जैसा कि एक बार पीटर ड्रकर ने कहा था- 'संस्कृति नाश्ते में रणनीति को खा जाती है।' इस तथ्य और हमारी खुद की अक्षमता और उनके भ्रष्टाचार ने इराक और अफगानिस्तान में लोकतंत्र के लिए अमेरिकी प्रयासों को खा लिया है।

यह सब यह बताने के लिए है कि ट्रंप के सीरिया से अचानक हटने और अफगानिस्तान से बाहर निकलने के बारे में मैं कैसे सोचता हूं। मुझे लगता है कि अफगानिस्तान के मामले में वह सही हैं। हमने वहां अल-कायदा को पराजित किया है; चरणबद्ध वापसी के लिए तालिबान और पाकिस्तान के साथ बातचीत करने का यह अच्छा अवसर है और जितने लोग हमारे लिए काम कर सकते हैं, उन्हें साथ लेने का समय है। अफगानिस्तान के चारों और रूस, पाकिस्तान, भारत, चीन और इरान जैसे देश हैं, जो वहां की अव्यवस्था को नियंत्रित एवं प्रबंधित करने की क्षमता रखते हैं। हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

हालांकि मैं सीरिया में अपना विशेष बल रखूंगा, लेकिन इसलिए नहीं कि आईएसआईएस को अभी हराना बाकी है। आईएसआईएस तो सऊदी अरब और इरान के नेतृत्व में चलने वाले शिया-सुन्नी के क्षेत्रीय संघर्ष का प्रत्यक्ष उत्पाद है। आईएसआईएस ईरान और इराक में समर्थक ईरानी शिया आतंकियों के चरमपंथ के खिलाफ एक सुन्नी प्रतिक्रिया के रूप में पैदा हुआ था। जब तक ईरान उस रणनीति का अनुसरण करता है, तब तक किसी न किसी रूप में आईएसआईएस रहेगा।

अंत में मैं अफगानिस्तान से बाहर निकलने के बाद हमारे पास बचने वाले 45 अरब डॉलर में से दो अरब डॉलर लूंगा और संपूर्ण अरब दुनिया में उन सांस्कृतिक बदलावों में निवेश करूंगा, जिन्होंने ट्यूनीशिया को अनूठा बनाया है। मैं काहिरा में अमेरिकी विश्वविद्यालय, बेरूत में अमेरिकी विश्वविद्यालय, इराक में अमेरिकी विश्वविद्यालय, सुलेमानी और अफगानिस्तान में अमेरिकी विश्वविद्यालय को बड़ी सहायता दूंगा।

और मैं व्यापक स्तर पर छात्रवृत्ति कार्यक्रम का विस्तार करूंगा। मैं अमेरिका में अध्ययन के लिए छात्र वीजा और छात्रवृत्ति का भी विस्तार करूंगा, खासकर अरब महिलाओं के लिए। और मैं दुबई में वीजा उपलब्ध करवाकर ईरानियों को अमेरिका आकर विज्ञान, इंजीनियरिंग या चिकित्सा में ग्रेजुएट की पढ़ाई के लिए 5000 छात्रवृत्ति का प्रस्ताव दूंगा। वहां लाइन इतनी लंबी होगी कि इससे ज्यादा और कुछ भी ईरानी शासन को शर्मिंदा नहीं करेगा।

और मैं ट्यूनीशिया को एक अरब डॉलर का ब्याज मुक्त कर्ज दूंगा और ट्यूनीशियाई अमेरिकी उद्यम का आकार चौगुना कर दूंगा, जो वहां स्टार्ट अप को प्रोत्साहित करेगा। बाकी के 43 अरब डॉलर मैं अमेरिका में नई बुनियादी संरचनाओं के विकास पर खर्च करूंगा। 9/11 के बाद से हम पूरी तरह हार्ड पावर पर निर्भर हो गए हैं। कुछ की जरूरत थी, कुछ की जरूरत अब भी है, लेकिन इनमें से ज्यादातर विफल रहे। अब यह सॉफ्ट पावर को आजमाने का समय है। हां, इसमें लंबा समय लगेगा, लेकिन इसका कोई शॉर्टकट नहीं है। और हम जिस पेंटागन के नेतृत्व में प्रयास कर रहे थे, उसने कई अंधी खाई की तरफ हमें धकेला है।

© The New York Times 2019

अंतर्ध्वनि

>> लू शुन

जीने का तरीका सबको खुद खोजना पड़ता है

एक शिक्षक अपने बच्चों को नहीं पढ़ाता, उसके बच्चों को दूसरे ही पढ़ाते हैं। एक डॉक्टर अपना इलाज खुद नहीं करता, उसका इलाज कोई दूसरा डॉक्टर करता है। लेकिन अपना जीवन जीने का तरीका हर आदमी को खुद खोजना पड़ता है। क्योंकि जीने की कला के जो भी नुस्खे दूसरे लोग बनाते हैं, वे बार-बार बेकार साबित होते हैं। दुनिया में प्राचीन काल से ही शांति और चैन बनाए रखने के लिए गरीबी में संतोष पाने का उपदेश बड़े पैमाने पर दिया जाता है।

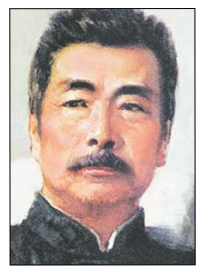

गरीबों को बार-बार बताया जाता है कि संतोष ही धन है। गरीबी में संतोष पाने के अनेक नुस्खे तैयार किए गए हैं, लेकिन उनमें कोई पूरी तरह सफल साबित नहीं हुआ है। अब भी रोज-रोज नए-नए नुस्खे बनाए जा रहे हैं। मैंने अभी हाल में ऐसे दो नुस्खों को देखा है। वैसे ये दोनों भी बेकार ही हैं। इनमें एक नुस्खा यह है कि लोगों को अपने कामों में दिलचस्पी लेनी चाहिए। अगर आप अपने काम में दिलचस्पी लेना शुरू कर दें, तो काम चाहे कितना ही मुश्किल क्यों न हो, आप खुशी से काम करेंगे और कभी नहीं थकेंगे। यदि आप एक ही विषय पर काम करते रहे, तो अवश्य ही उसके चरम तक जा पहुंचेंगे। इसकी चिंता न करते हुए यदि आप निरंतर उसी विषय से संबंधित नई-नई चीजों पर प्रकाश डालते रहें, तो लोग समझेंगे कि अपनी हंसी आप स्वयं उड़ा रहे हैं। इसके बावजूद आप निरंतर काम करते रहें और कुछ समर्थकों को भी इकट्ठा कर लें, तो लोग इसे सामान्य रूप में लेने लगेंगे। फिर आप निश्चिंत होकर काम तो करते ही रहेंगे, उसमें पूरी तरह सफल भी हो सकेंगे। मेरा हृदय असाधारण रूप से एकाकी है। पर मेरा हृदय शांत है, प्रेम और घृणा, आनंद और उदासी, रंग और स्वर, सबसे शून्य।

-चीन के मशहूर कवि

मंजिलें और भी हैं

>> सुशांत

भरोसे की बिसात पर जरूरतमंदों की मदद

सब कुछ कुछ समय पहले शुरू हुआ। मेरा पड़ोसी हैरिस एक दुर्घटना का शिकार हो गया। उसकी माली हालत ऐसी नहीं थी कि वह अपना सही ढंग से इलाज करा पाता। मुझे कुछ नहीं सूझा और मैंने हैरिस का वीडियो बनाया और मदद की अपील के साथ उसे सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। मैं अचंभित था कि मेरी अपील का लोगों पर ऐसा असर पड़ा कि हैरिस के लिए दो लाख रुपये इकट्ठा होने में देर नहीं लगी।

मैं केरल के मल्लापुरम जिले के नीलांबर तालुक में रहता हूं। हैरिस की मदद करके मेरे दिमाग में इस तरह का काम जारी रखने का विचार पैदा हुआ। पिछले कई वर्षों से मैं फेसबुक पर सक्रिय हूं। भले ही मैं ऑटो चलाता हूं, पर मैं अपने आसपास के मुद्दों को लेकर काफी जागरूक रहता हूं। समाज में कुछ गलत होता देख मेरा मुंह अपने आप खुल जाता है। राजनेताओं की किसी नीति की आलोचना करना मेरा नियमित अभ्यास है। खास बात यह है कि मेरी आलोचनात्मक वीडियो को सैकड़ों लोग देखते भी हैं। अब जबकि लोग मेरी आलोचनाओं की हां में हां मिलाते थे, तो मैंने सोचा क्यों न इन्हीं लोगों की ताकत का इस्तेमाल किसी बदलाव के लिए किया जाए!

भले ही मैं ऑटो चलाता हूं, पर मैं अपने आसपास के मुद्दों को लेकर काफी जागरूक रहता हूं।

पिता के देहांत के बाद मेरे घर की आर्थिक हालत काफी बिगड़ गई थी। मुझे न सिर्फ पढ़ाई छोड़नी पड़ी, बल्कि कई तरह के समझौते करने पड़े। हालांकि उस वक्त तक मैंने बारहवीं तक की शिक्षा हासिल कर ली थी। आज आजीविका के लिए मैंने कई तरह के काम करता हूं। ऑटो चलाने के सिवा मैं मजदूरी भी करता हूं। कुल मिलाकर पांच सौ रुपयों तक मैं हर दिन कमा लेता हूं। घर की जरूरतों के बाद मैं जो भी बचत कर पाता हूं, वह यात्रा पर खर्च करता हूं। जब मैं किसी नए स्थान पर जा रहा होता हूं, तो ज्यादातर समय मेरे पास रहने के लिए कुछ भी पैसा नहीं होता। इसलिए मैं बस या रेलवे स्टेशन पर ही सोकर काम चलाता हूं।

मदद का मेरा मौजूदा काम विशुद्ध रूप से विश्वास पर आधारित है। मुझे पता था कि कई लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे और मुझे और मेरे काम को एक फरेब पुकारेंगे। ऐसा हुआ भी और मुझ पर अक्सर अपने लाभ के लिए धन का उपयोग करने का आरोप लगाया गया। जबकि मैंने हमेशा जरूरतमंद व्यक्तियों के खाता नंबरों को सार्वजनिक किया है, न कि अपना। हालांकि कुछ वक्त बीतने के बाद मैंने कुछ लोगों का भरोसा जीत लिया। मेरी मेहनत का यह सबसे बड़ा ईनाम था।

हाल ही में मैंने एक बच्चे की किडनी ट्रांसप्लांटेशन के लिए बीस लाख रुपयों का इंतजाम कराया। जबकि उस बच्चे के परिवार को इससे कम रुपयों की ही जरूरत थी। मैं हैरान था कि उस परिवार ने अतिरिक्त पैसों का इस्तेमाल विभिन्न संपत्तियां खरीदने में खर्च कर दी। वास्तव में मेरे काम के लिए यह बड़ा झटका था। उस घटना के बाद मैं अब कि किसी भी जरूरतमंद के लिए चंदा इकट्ठा करने से पहले उससे एक शपथ पत्र पर हस्ताक्षर कराता हूं कि यदि ज्यादा पैसे आते हैं, तो उससे दूसरे किसी वंचित की मदद करनी होगी। इसके अलावा मैंने विश्वसनीयता बरकरार रखने के लिए कुछ अन्य तरीकों का भी प्रयोग किया है। मैं मानता हूं कि अगर लोग मुझ पर विश्वास दिखाते हैं, तो मुझे भी दूसरों पर भरोसा करना होगा। कुछेक गलत लोगों से इंसानियत कभी खत्म नहीं होगी।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

क्रिकेट की धारणा बदलते धोनी

हमें यह मान लेना चाहिए कि वह अब पहले वाले धोनी नहीं हैं, जो कि किसी भी गेंदबाज पर छक्का जमा देता था। पर वह अब भी विकेट पर टिकने का माद्दा रखते हैं, इसलिए टीम इंडिया के लिए विश्व कप में बहुत उपयोगी हैं।

मनोज चतुर्वेदी

कभी-कभी एक घटना भर से किसी व्यक्ति विशेष के बारे में बनी सोच एकदम से बदल जाती है। भारतीय किक्रेट में पिछले दिनों कुछ ऐसा ही देखने को मिला। क्रिकेट का सबसे बड़ा मेला यानी आईसीसी विश्व कप करीब आने से सभी का ध्यान उसकी तैयारी की तरफ है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज शुरू होने से पहले पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को विश्व कप में खिलाने को लेकर आलोचना हो रही थी। वहीं पेस गेंदबाज ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या और लोकेश राहुल को विश्व कप के लिए अहम खिलाड़ी माना जा रहा था। पर पिछले दिनों घटी दो घटनाओं के बाद धोनी की आलोचनाएं प्रशंसा में बदल गई हैं और हार्दिक और लोकेश राहुल के खेलने पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं।

महेंद्र सिंह धोनी की आलोचनाओं की वजह पिछले साल यानी 2018 में खेले 20 वनडे मैचों में सिर्फ 275 रन बना पाना और उसमें भी कोई अर्धशतक नहीं जड़ पाना रहा है। वह कई बार पारी को तेजी देने की जरूरत पर भी रनों की रफ्तार नहीं बढ़ा सके। इसके विपरीत युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत का ताबड़तोड़ अंदाज में रनों की बौछार करने से क्रिकेट प्रेमियों को लगने लगा कि धोनी का समय अब नहीं रहा है और वह पंत की राह को रोक रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले वनडे की हार ने इस सोच को और मजबूती दे दी। लेकिन दूसरे वनडे में धोनी को लेकर सोच ही बदल गई। इस मैच के बाद तीसरे वनडे में भी लगातार तीसरा अर्धशतक लगाने से एकाएक उनकी प्रशंसाओं का दौर चल निकला। इसके बाद लोगों को लगने लगा कि धोनी के टीम में रहने से टीम इंडिया की विश्व कप की दावेदारी में और जान पड़ जाएगी।

धोनी की फिनिशर की भूमिका में फिर से कारगर रहने के बाद भी हमें गावस्कर की इस बात को ध्यान में रखना होगा कि धोनी अब युवा नहीं हो सकते, इसलिए उनसे युवा दिनों वाले प्रदर्शन की उम्मीद करना सही नहीं है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज में धोनी ने 193.00 के औसत से इतने ही रन बनाने और कॅरियर में सातवीं बार 'मैन ऑफ द सीरीज' बनने के बावजूद हमें यह मान लेना चाहिए कि वह अब पहले वाले धोनी नहीं हैं, जो कि किसी भी गेंदबाज पर छक्का जमा देता था। पर वह अब भी विकेट पर टिकने का माद्दा रखते हैं, इसलिए टीम इंडिया के लिए विश्व कप में बहुत उपयोगी हैं।

दूसरी ओर हार्दिक पांड्या और लोकेश राहुल दोनों युवा खिलाड़ी हैं और कोहली की विश्व कप योजना के हिस्सा रहे हैं। लेकिन करण जौहर के कार्यक्रम कॉफी विद करण में महिलाओं को लेकर अनुचित टिप्पणी करने का उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। इन दोनों को क्या सजा दी जाए, इस पर अभी विचार की प्रक्रिया ही शुरू नहीं हो सकी है। कारण बीसीसीआई के संचालकों में आपस में विवाद चलना है। बीसीसीआई के नए संविधान के मुताबिक, लोकपाल ही ऐसे मामलों को सुन सकता है। लेकिन उसकी नियुक्ति साधारण सभा ही कर सकती है। पर बीसीसीआई के कार्यवाहक अध्यक्ष साधारण सभा बुलाने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ऐसा करके कहीं वह सुप्रीम कोर्ट के निशाने पर न आ जाएं। प्रशासकों की समिति और बोर्ड पदाधिकारियों के मतभेदों की वजह से हार्दिक और लोकेश राहुल इन दो सीरीजों में खेलने से तो रह गए हैं। पर अब कहीं उनकी विश्व कप की गाड़ी भी न छूट जाए। इससे लगता है कि बीसीसीआई में पिछले दो वर्षों में सुधार को लेकर बहुत कुछ चलने पर भी टीम के हितों पर ध्यान दिए जाने वाली स्थिति नहीं बनी है।

ऐसे में जरूरी है कि धोनी को विश्व कप तक उनके हाल पर छोड़ दिया जाए और हार्दिक और लोकेश के मामले को जल्द से जल्द निपटाया जाए, तभी टीम इंडिया का भला हो सकता है।

खुली खिड़की

बिग मैक इंडेक्स

विभिन्न देशों में खर्च की क्षमता को नापने के लिए बिग मैक सूचकांक का सहारा लिया जाता है। अर्थव्यवस्थाओं की क्रय शक्ति जानने के लिए यह सूचकांक विभिन्न देशों में फूड स्टोर्स में बिकने वाले बिग मैक हैम्बर्गर की कीमत को आधार बिंदु बना कर तैयार किया जाता है।

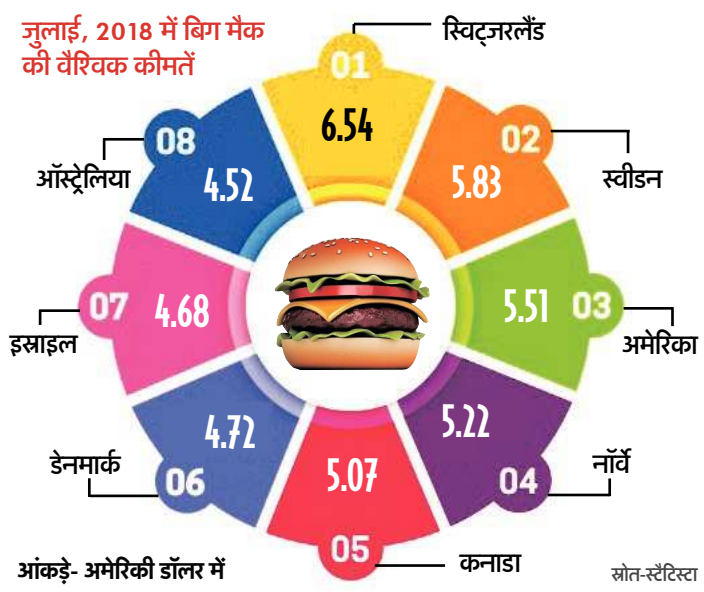

गलती का एहसास

सत्संग

प्राचीन समय की बात है। महात्मा बुद्ध वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे। पूर्णिमा की रात थी, प्रकाशवान चंद्रमा की रंगत देखते ही बनते थी। तभी पास के गांव से कुछ मनचले युवक एक स्त्री का अपहरण कर उसी ओर से गुजरे, जहां तथागत विश्राम कर रहे थे। आगे जाकर उन युवकों ने उस स्त्री के वस्त्र भी छीन लिए। वे सब शराब के नशे में मदहोश होकर नाच-कूद रहे थे। उनको बेहोश हुआ देखकर स्त्री वहां से भाग निकली। युवकों को जब थोड़ा होश आया, तो देखा कि वे जिसके लिए नाच रहे थे, वह उनके बीच नहीं है। युवक तुरंत उसे खोजने निकले। लेकिन रात को जंगल में उसे खोज पाना उनके लिए बहुत मुश्किल था। फिर वे उस वृक्ष के पास आ पहुंचे, जहां बुद्ध विश्राम कर रहे थे। उन युवकों ने आपस में मंत्रणा की कि यह भिक्षु यहां है, यही तो एक रास्ता है जाने का। वह स्त्री जरूर यहीं से गुजरी होगी। उन्होंने बुद्ध से कहा कि सुनो भिक्षु, यहां से कोई सुंदर युवती भागती हुई निकली है? तुमने देखी है? बुद्ध ने उत्तर दिया, कोई निकला जरूर, लेकिन युवती थी या युवक, कहना मुश्किल है। और व्याख्या करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। वे युवक थोड़ी देर असमंजस में सोचते-विचारते रहे, फिर उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और वे बुद्ध से क्षमा मांग कर अपने रास्ते चले गए।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

राणा, मां और क्रिकेट का जुनून

एक बेटे की कहानी, जिसने आखिरकार अपनी मां का दिल जीत लिया।

राणा क्रिकेट का बहुत बड़ा फैन था। बचपन में ही उसके पिता की एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। मां ने ही उसका पालन-पोषण किया था। उसकी मां हमेशा राणा को पढ़ाई में मन लगाने को कहती, लेकिन वह पढ़ते वक्त भी क्रिकेट के बारे में ही सोचता रहता। उसके दिमाग से क्रिकेट का भूत उतारने के लिए मां ने सारे खेल बंद करवा दिए। लेकिन उस पर फर्क न पड़ा। वह कभी बेलन को अपना बैट बना लेता, तो कभी किताबों को। राणा की मां को कई लोगों ने समझाया कि उसको क्रिकेट खेलने दें, वह बहुत अच्छा कर सकता है। लेकिन उन्हें यह बात जरा भी समझ नहीं आई। राणा धीरे-धीरे बड़ा होता गया। राणा मां को दुखी नहीं देखना चाहता था। उसने तय किया कि वह मां के सामने क्रिकेट नहीं खेलेगा, न उन्हें यह पता चलने देगा कि वह अब भी क्रिकेट को पसंद करता है। वह चोरी-छिपे क्रिकेट खेलने लगा। एक दिन राणा की मुलाकात एक मशहूर टीम के कोच से हुई। वह कई दिनों से राणा का खेल देख रहे थे। उन्होंने राणा को अपनी टीम से खेलने की पेशकश की। राणा को पता था कि अगर वह इस टीम में खेलेगा, तो उसकी मां को पता चल जाएगा और उन्हें बहुत बुरा लगेगा। लेकिन राणा ने तय किया कि वह अब क्रिकेट नहीं खेलेगा। राणा ने निर्णय तो ले लिया, पर वह उदास रहने लगा। उसकी मां ने उससे कई बार जानने की कोशिश की कि वह इतना उदास क्यों है। पर उसने मां को कुछ नहीं बताया। एक दिन उसकी मां क्रिकेट किट और चमचमाते जूते के साथ घर लौटी। राणा यह देखकर दंग रह गया। मां बोली, बेटा, मुझे माफ कर देना। इससे पहले कि मां कुछ और बोलती, राणा उनके गले लग गया। दोनों फूट-फूटकर रोने लगे। अगले दिन राणा पहली बार मां के साथ अपने कॅरिअर का पहला मैच खेलने गया।

झूठ का रास्ता आसान होता है, पर सच नामुमकिन को मुमकिन कर सकता है।